IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नीरा आर्यः स्वतंत्रता संग्राम की गुमनाम नायिका

Suman Rao
Assistant Professor,
S.D.(PG) College Panipat, Haryana, India

सारांश–

नीरा आर्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक बहादुर क्रांतिकारी महिला थी, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज की जासूसी शाखा से जुड़ी थी और अपने अदम्य साहस के लिए जानी जाती है।

यह शोध पर नीरा आर्य के जीवन, उनके योगदान, बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें उनकी जासूसी गतिविधियों, ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनके संघर्ष, और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, यह शोध स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका और उनके योगदान को समझने में भी सहायक होगा।

यह अध्ययन ऐतिहासिक दस्तावेजों, उपलब्ध साहित्य, और शोध स्रोतों के आधार पर किया गया है, जिससे नीरा आर्य के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्द – आजाद हिंद फौज, बलिदान, नीरा आर्य, रानी झांसी रेजिमेंट।

उद्देश्य–

1) इस शोध पत्र द्वारा नीरा आर्य के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका और उनके बलिदान को विस्तार से समझना।

2) इस शोध पत्र द्वारा उनके कार्यों का भारतीय समाज पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना।

3) इस शोध पत्र द्वारा उनके जीवन संघर्षों और वीरता को उजागर कर नई पीढ़ी को प्रेरित करना।

प्रस्तावना–

देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने वाले गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों में बहुत सी वीरांगनाएँ भी थी और उन्हें वीरांगनाओं में एक थी नीरा आर्य। जो आजाद हिंद फौज की रानी झांसी रेजिमेंट की सिपाही थी जिसने सुभाष चंद्र बोस की जान के दुश्मन बने अंग्रेज सरकार में सीआईडी इंस्पेक्टर अपने पति श्रीकांत जयरंजन को मार डाला था। यह एक महान देशभक्त, साहसी,व एक स्वाभिमानी महिला थी, इन्हें 'नीरा नागिनी' के नाम से भी जाना जाता है।

नीरा आर्य का जीवन परिचय–

नीरा आर्य का जन्म 5 मार्च 1902 को तत्कालीन संयुक्त प्रांत के खेकड़ा नगर में हुआ था। वर्तमान में खेकड़ा उत्तर प्रदेश के बागपत जिले का एक शहर है[1]। जब वे मात्र 8 वर्ष की थी, तब महामारी के चलते उनकी माता लक्ष्मी देवी और पिता महावीर का देहांत हो गया था[2] ।

उन्हीं दिनों खेकड़ा में आर्य समाज का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें भाग लेने के लिए कोलकाता का एक व्यापारी सेठ छज्जूमल आया था और सेठ छज्जूमल ने नीरा और उसके भाई बसंत को गोद ले लिया था[3]। इसी कारण नीरा की शिक्षा दीक्षा कोलकाता में हुई। नीरा की प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता के निकट भगवानपुरा ग्राम में हुई थी[4]। मीरा आर्य हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली के साथ–साथ कई भाषाओं में प्रवीण थी।

.....

1 विकिपीडिया
2. चित्रा गर्ग : देशभक्तो की अमर कहानियाँ
3. चित्रा गर्गः देशभक्तो की अमर कहानियाँ
4. विकिपीडिया

25 दिसंबर 1928 को नीरा का विवाह ब्रिटिश सरकार में सीआईडी इंस्पेक्टर श्रीकांत जयरंजन दास के साथ हुआ था[5]। जय रंजन दास अंग्रेज भक्त अधिकारी थे तथा उसको सुभाष चंद्र बोस की जासूसी और हत्या करने की जिम्मेदारी दी गई थी। नीरा के विवाह के बाद पता चला कि उनके पति कई स्वतंत्रता सेनानियों को भी पकड़वा चुके हैं। और अब वह नेताजी सुभाष चंद्र बोस को मौत के घाट उतारने की योजना बना रहे हैं।

नीरा आर्य का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान –

1) आजाद हिंद फौज से जुड़ाव :

नीरा के पति श्रीकांत जयरंजन जो ब्रिटिश सेना में अधिकारी थे उनको सुभाष चंद्र बोस की जासूसी और हत्या करने की जिम्मेदारी दी गई थी जब यह बात नीरा को पता चली तो नीरा ने दो टूक कह दिया कि सरकारी नौकरी या मुझमें से किसी एक को चुन लो। पति ने जब नौकरी को चुना तो उसी क्षण नीरा ने ससुराल छोड़ दिया।

इसके बाद नीरा आर्य कोलकाता से दिल्ली आ जाती है और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगती है। इसी दौरान नीरा की मुलाकात अपने एक परिचित रामसिंह से होती है। राम सिंह से ही नीरा को आजाद हिंद फौज में शामिल होने एवं सिंगापुर जाने की जानकारी मिलती है। नीरा ने आजाद हिंद फौज में शामिल होने की इच्छा जताई और वह सिंगापुर पहुंच जाती है। और आजाद हिंद फौज की रानी झांसी रेजीमेंट में भर्ती हो गई।

नीरा आर्य ने रेजीमेंट की प्रथम कमांडर लक्ष्मी सहगल एवं सचिव मानवती आर्य के नेतृत्व में सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया[6]। 22 अक्टूबर 1943 को सुभाष चंद्र बोस ने रानी झांसी की विधिवत घोषणा की[7]।

2) आजाद हिंद फौज की पहली जासूस :

नीरा आर्य की काबिलियत को देखते हुए उन्हें गुप्तचर विभाग में अंग्रेजों की जासूसी करने की जिम्मेदारी दी गई[8]। इसी कारण उन्हें देश की पहली महिला जासूस भी कहा जाता है।

गुप्तचर विभाग के अध्यक्ष पवित्र मोहन राय के आदेश पर नीरा तथा उसकी सहेली सरस्वती राजमणि, जानकी, बेला तथा दुर्गा ने अपनी जिम्मेदारी संभाली[9]। इसी बीच जासूसी करते हुए दुर्गा पकड़ी जाती है। दुर्गा

को छुड़ाने के लिए नीरा और उसकी मित्र सरस्वती राजमणि कीन्नरो की वेशभूषा में बंदीग्रह के पास पहुंची और दुर्गा को छुड़ा लाती है[10]।

दुर्गा को लेकर जब आजाद हिंद फौज के केंद्र पर पहुंची तो सुभाष चंद्र बोस ने इसकी बहादुरी की खूब प्रशंसा की और इसके बाद नीरा आर्य को कप्तान बनाया गया, साथ ही सुभाष चंद्र बोस की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी नीरा को मिल गई। नीरा ने अपनी आत्मकथा में बताया है कि हमने लड़कों की वेशभूषा अपना ली और अंग्रेज अफसरो के घरों और मिलिट्री कैंपो में काम करना शुरू किया[11]। इन्होंने आजाद हिंद फौज के लिए बहुत सूचनाए इकट्ठा की थी।

3) बलिदान की मिशाल :

नीरा आर्य ने अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन संघर्ष' मैं लिखा है की एक रात वह नेताजी की सुरक्षा में तैनात थी तभी उन्हें किसी के होने का एहसास हुआ जब उन्होंने चेतावनी दी तो उनके पति श्रीकांत जयरंजन दास हाथ में रिवाल्वर लेकर खड़े हो गए। श्रीकांत ने नेताजी पर गोली चला दी, लेकिन गोली उनके ड्राइवर निजामुद्दीन को लगी।

.....

.....

5. मेरा जीवन सघर्ष' ''नीरा आर्य''
6. मेरा जीवन सघर्ष'' ''नीरा आर्य''
7. आजाद हिंद की पहली जासूस ''मधु धामा''
8. आजाद आजाद हिंद फौज के गुमनाम सैनिका के गुमनाम सैनिक मन्नाथनाथगुप्त
9. देशभक्तो की अमर कहानियाँ, चित्रा गर्ग (हिन्द पाकेट हानियाँ, चित्रा गर्ग हिन्दपाकेट बुक्स, संस्करण 1968
10. मेरा जीवन संघर्ष नीरा आर्य
11. मेरा जीवन संघर्ष नीरा आर्य

इस पर नीरा ने राइफल की संगीन से पति को मार डाला। बाद में नीरा ने जासूसी का काम बखूबी निभाया। किंतु 3 मई 1945 को पति की हत्या के इल्जाम में गिरफ्तार कर लिया गया और काला पानी की सजा सुनाई।

जेल में यातनाएं सही–

जेल में ब्रिटिश सैनिकों द्वारा उनके ऊपर कोड़े बरसाए गए तथा भूखा रखा गया। इतनी यातनाएं सहने के बाद भी इन्होंने अपने साथियों के नाम नहीं बताएं।

इन्होंने अपनी आत्मकथा में बताया है कि मुझे गिरफ्तार करने के बाद पहले कोलकाता जेल में भेजा गया। हमें रात के 10 बजे कोठरियो में बंद कर दिया गया और चटाई कंबल आदि का नाम भी नहीं सुनाई पड़ा[12]। रात के 12 बजे पहरेदार 2 कंबल लेकर आया और बिना बताए ही ऊपर फेंक कर चला गया। बुरा तो लगा, परंतु कंबलों को पाकर मन में संतोष भी आ गया। अब केवल लोहे के बंधन का कष्ट तथा भारत माता से जुदा होने का ध्यान साथ में था[13]।

''सूर्य निकलते ही मुझको खिचड़ी मिली और लोहार भी आ गया। हाथ की सांकल काटते समय थोड़ा सा चमड़ा भी काटा, परंतु पैरों में से आड़ी बेड़ी काटते समय, दो–तीन बार हथौड़ी से पैरों की हड्डी को जाँचा की

कितनी पुष्ट है। मैंने एक बार दुखी होकर कहा,'' क्या अंधा है, जो पैर में मारता है?[14] ''पैर क्या हम तो दिल में भी मार देंगे, क्या कर लोगी?'' उसने मुझे कहा। ''बंधन में हूँ तुम्हारा कर भी क्या सकती हूँ'' फिर मैंने उसके ऊपर थूक दिया, ''औरतो की इज्जत करना सीखो?'' जेलर भी साथ में थे तो उन्होंने कड़कती आवाज में कहा,'' तुम्हें छोड़ दिया जाएगा, यदि तुम बता दोगी कि तुम्हारे नेताजी सुभाष चंद्र बोस कहां है?[15] ''वे तो हवाई दुर्घटना में चल बसे, मैंने जवाब दिया। नेताजी जिंदा है... झूठ बोलती हो तुम... जेलर ने कहा। ''हाँ नेताजी जिंदा है।'' तो कहां है...''मेरे दिल में जिंदा है वे।[16] '' मैंने कहा।

जेलर ने कहॉ ठिक है तो तुम्हारे दिल से ही निकालेंगे और लुहार को संकेत किया, लुहार ने जंबूड जैसा औजार जो फुलवारी काटने के काम आता है उठाया और नीरा के स्तनो को काटने लगा, लेकिन उस औजार में धार नहीं थी ठूँठा था, लेकिन स्तनो को असहनीय पीड़ा हुई। दूसरी और जेलर ने गुस्से में कहा, अगली बार जुबान लड़ाई तो तुम्हारी छाती से अलग कर दिए जाएंगे [17]।

इस तरह इतनी पीड़ा से गुजरने के बाद भी नीरा ने अपने साथियों के नाम नहीं बताएं। उन्हें इतनी यातनाएं दी गई, उन्हें कोड़े मारे गए, जेल में रखा गया, भूखे भी मरना पडा। लेकिन उन्होंने कभी भी अपने साथियों के नाम नहीं बताएं।

जीवन के अंतिम दिन–

नीरा आर्य अपनी जीवन के अंतिम दिनों में हैदराबाद चली जाती है। और वही झोपड़ी बनाकर रहने लगती है। अपने गुजारे के लिए फूल बेचा करती थी। फूलों को बेचकर ही वह अपना जीवन बसर कर रही थी। ये झोपड़ी सरकारी जमीन पर होने के कारण उनकी झोपड़ी भी तोड़ दी गई। उनके भाई बसंत भी आजादी के बाद संयासी बन गए थे। नीरा आर्य ने बीमारी की हालत में 26 जुलाई 1998 को चारमीनार के पास उस्मानिया अस्पताल में अंतिम सांस ली। उनकी इस कठिन यात्रा के बावजूद उन्होंने कभी सरकारी सहायता या पेंशन स्वीकार नहीं की और आत्म सम्मान के साथ जीवन व्यतीत किया[18]।

.....

12. मेरा जीवन संघर्ष, नीरा आर्य
13 विकिपीडिया
14 मेरा जीवन सघर्ष, नीरा आर्य
15 वही
16 वही
17 नीरा आर्य की आत्मकथा
18 विकिपीडिया

निष्कर्ष–

नीरा आर्य का जीवन बलिदान, साहस और राष्ट्रभक्ति की मिसाल है। उन्होंने अपने कर्तव्य के लिए व्यक्तिगत संबंधों की आहुति दी, और मातृभूमि की रक्षा को सर्वोच्च स्थान दिया। उनके बलिदान को याद रखना और नई पीढ़ी को उनकी गाथा से प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है।

नीरा आर्य एक अव्दितीय स्वतंत्रता सेनानी थी, जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। जिसने देश के लिए पति हत्या का कलंक भी अपने सर ले लिया। उनका जीवन राष्ट्रभक्ति,

साहस और बलिदान की मिसाल है। यह शोध पत्र उनके अव्दितीय योगदान को समझने और उनसे प्रेरणा लेने का एक प्रयास है।

1) नीरा आर्य : आजाद हिन्द की पहली जासूस, मधुधामा प्रकाशक : आर्यखंड टेलीविजन प्राइवेट लिमिटेड संस्करणः प्रथम, 2021
2) आजाद हिन्द फौज के गुमनाम सैनिक,मन्मथनाथ गुप्त, हिन्दपाकेट बुक्स, संस्करण 1968
3) देशभक्तो की अमर कहानियाँ, चित्रा गर्ग हिन्दपाकेट बुक्स, संस्करण, 1968
4)''मेरा जीवन संघर्ष, नीरा आर्य
5) विकिपीडिया
6 ये जासूस महिलाए, सत्यदेव नारायण सिन्हा, हिन्दपाकेट बुक्स, संस्करण, 1968